प्रतियोगी हिन्दी

Competitive Hindi

For All Govt. Exams

दोस्तों हमारी इस छोटी सी हिन्दी की किताव में आपको हिन्दी का व्याकरण प्राप्त होगा , जो कि बिभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी है। तो दोस्तों इस पूरी पीडीएफ फाइल का अध्ययन करें।

Contact Number - 7470638993

Website - RAMKESHeducation.com

वर्ण - हिन्दी भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी ध्वनि वर्ण कहलाती है। जैसे-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, क्, ख् आदि।

वर्णमाला - वर्णों के समुदाय को ही वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं। उच्चारण और प्रयोग के आधार पर हिन्दी वर्णमाला के दो भेद किए गए हैं-

1 स्वर और

2 व्यंजन

स्वर - जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता हो और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक हों वे स्वर कहलाते है।

ये संख्या में ग्यारह हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

उच्चारण के समय की दृष्टि से स्वर के तीन भेद किए गए हैं-

1. ह्रस्व स्वर।
2. दीर्घ स्वर।
3. प्लुत स्वर।

1. **ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता हैं उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं।

ये चार हैं- अ, इ, उ, ऋ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

2. **दीर्घ स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।

ये हिन्दी में सात हैं- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. **प्लुत स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्रायः इनका प्रयोग दूर से बुलाने में किया जाता है।

व्यंजन - जिन वर्णों के पूर्ण उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है वे व्यंजन कहलाते हैं। अर्थात व्यंजन बिना स्वरों की सहायता के बोले ही नहीं जा सकते। ये संख्या में 33 हैं।

इसके निम्नलिखित तीन भेद हैं-

1. स्पर्श

RAMKESHeducation.com

2. अंतःस्थ

3. ऊष्म

1.स्पर्श- इन्हें पाँच वर्गों में रखा गया है और हर वर्ग में पाँच-पाँच व्यंजन हैं। हर वर्ग का नाम पहले वर्ग के अनुसार रखा गया है जैसे-

क वर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्
च वर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्
ट वर्ग- ट् ठ् ड् ढ् ण् (ड़् ढ़्)
त वर्ग- त् थ् द् ध् न्
प वर्ग- प् फ् ब् भ् म्

2. **अंतःस्थ-** यह निम्नलिखित चार हैं- य् र् ल् व्

3. ऊष्म- ये निम्नलिखित चार हैं- श् ष् स् ह्

जहाँ भी दो अथवा दो से अधिक व्यंजन मिल जाते हैं वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं, किन्तु देवनागरी लिपि में संयोग के बाद रूप-परिवर्तन हो जाने के कारण इन तीन को गिनाया गया है।

ये दो-दो व्यंजनों से मिलकर बने हैं जैसे-
क्ष=क्+ष अक्षर
त्र=त्+र नक्षत्र
ज्ञ=ज्+ञ ज्ञान

कुछ लोग क्ष् त्र् और ज्ञ् को भी हिन्दी वर्णमाला में गिनते हैं, पर ये संयुक्त व्यंजन हैं। अतः इन्हें वर्णमाला में गिनना उचित प्रतीत नहीं होता।

अनुस्वार- इसका प्रयोग पंचम वर्ण के स्थान पर होता है। इसका चिन्ह (ं) है।
जैसे- सम्भव=संभव, सञ्जय=संजय, गड़्गा=गंगा।

विसर्ग- इसका उच्चारण ह् के समान होता है। इसका चिह्न (:) है।
जैसे-अतः, प्रातः।

चंद्रबिंदु- जब किसी स्वर का उच्चारण नासिका और मुख दोनों से किया जाता है तब उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगा दिया जाता है।
यह अनुनासिक कहलाता है।
जैसे-हँसना, आँख।

RAMKESHeducation.com

लेकिन आजकल आधुनिक पत्रकारिता में सुविधा और स्थान की दृष्टि से चंद्रबिन्दु को लगभग हटा दिया गया है। लेकिन भाषा की शुद्धता की दृष्टि से चन्द्र बिन्दु लगाए जाने चाहिए।

हिन्दी वर्णमाला में 11 स्वर तथा 33 व्यंजन गिनाए जाते हैं, परन्तु इनमें ड़, ढ़ अं तथा अः जोड़ने पर हिन्दी के वर्णों की कुल संख्या 48 हो जाती है।

हलंत- जब कभी व्यंजन का प्रयोग स्वर से रहित किया जाता है तब उसके नीचे एक तिरछी रेखा (्) लगा दी जाती है। यह रेखा हल कहलाती है। हलयुक्त व्यंजन हलंत वर्ण कहलाता है।

जैसे-सतत्

वर्णों के उच्चारण-स्थान - मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण होता है उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं।

उच्चारण स्थान तालिका -

1. अ आ क् ख् ग् घ् ड़् ह् विसर्ग कंठ और जीभ का निचला भाग कंठस्थ
2. इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श तालु और जीभ तालव्य
3. ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् ड़् ढ़् र् ष् मूर्धा और जीभ मूर्धन्य
4. त् थ् द् ध् न् ल् स् दाँत और जीभ दंत्य
5. उ ऊ प् फ् ब् भ् म दोनों होंठ ओष्ठ्य
6. ए ऐ कंठ तालु और जीभ कंठतालव्य
7. ओ औ दाँत जीभ और होंठ कंठोष्ठ्य
8. व् दाँत जीभ और होंठ दंतोष्ठ्य

संज्ञा - किसी व्यक्ति, गुण, प्राणी व जाति, स्थान (जगह), वस्तु, क्रिया और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहा जाता है।

जैसे – पशु, पक्षी, मानव (जाति व प्राणी), दिल्ली, मंदिर (स्थान व जगह), दादा, दादी, सुरेश, रमेश (व्यक्ति), पेन, किताब, साइकिल (वस्तु), हँसना, रोना, गाना (भाव), सुन्दर, साफ सुथरा (गुण), भागना, खाना, मारना-पीटना (क्रिया)

संज्ञा के भेद :-

1. जातिवाचक संज्ञा
2. भाववाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा
4. समूहवाचक संज्ञा
5. द्रव्यवाचक संज्ञा

RAMKESHeducation.com

1. जातिवाचक संज्ञा क्या होती है :- जिस शब्द से एक ही जाति के अनेक प्राणियों , वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं अथार्त जिस शब्द से किसी जाति का सम्पूर्ण बोध होता हो यह उसकी पूरी श्रेणी और पूर्ण वर्ग का ज्ञान होता है उस संज्ञा शब्द को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :- मोटर साइकिल, कार, टीवी, पहाड़, तालाब, गाँव,लड़का, लडकी,घोडा, शेर।

2. भाववाचक संज्ञा क्या होती है :- जिस संज्ञा शब्द से किसी के गुण, दोष, दशा, स्वाभाव , भाव आदि का बोध हो वहाँ पर भाववाचक संज्ञा कहते हैं। अथार्त जिस शब्द से किसी वस्तु , पदार्थ या प्राणी की दशा , दोष, भाव , आदि का पता चलता हो वहाँ पर भाववाचक संज्ञा होती है।

उदहारण:- गर्मी, सर्दी, मिठास, खटास, हरियाली, सुख।

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा क्या होती है :- जिस शब्द से किसी एक विशेष व्यक्ति , वस्तु, या स्थान आदि का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। अथार्त जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष स्थान, वस्तु,या व्यक्ति के नाम का पता चले वहाँ पर व्यक्तिवाचक संज्ञा होती है।

उदहारण :- भारत, गोवा, दिल्ली, भारत, महात्मा गाँधी , कल्पना चावला , महेंद्र सिंह धोनी , रामायण ,गीता, रामचरितमानस आदि।

4. समूहवाचक संज्ञा क्या होती है :- इसे समुदायवाचक संज्ञा भी कहा जाता है। जो संज्ञा शब्द किसी समूह या समुदाय का बोध कराते है उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। अथार्त जो शब्द किसी विशिष्ट या एक ही वस्तुओं के समूह या एक ही वर्ग व् जाति के समूह को दर्शाता है वहाँ पर समूहवाचक संज्ञा होती है।

उदहारण :- गेंहू का ढेर, लकड़ी का गट्ठर , विद्यार्थियों का समूह , भीड़ , सेना, खेल आदि।

5. द्रव्यवाचक संज्ञा क्या होती है :- जो संज्ञा शब्द किसी द्रव्य पदार्थ या धातु का बोध कराते है उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। अथार्त जो शब्द किसी पदार्थ, धातु और द्रव्य को दर्शाते हैं वहाँ पर द्रव्यवाचक संज्ञा होती है।

उदहारण :- गेंहू , तेल, पानी, सोना, चाँदी, दही , स्टील , घी, लकड़ी आदि।

RAMKESHeducation.com

सर्वनाम - संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। संज्ञा की पुनरुक्ति न करने के लिए सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - मैं, तू, तुम, आप, वह, वे आदि।

सर्वनाम के भेद -

सर्वनाम के मुख्य छः भेद होते है

1. पुरुषवाचक सर्वनाम।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम।
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम।
4. संबंधवाचक सर्वनाम।
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम।
6. निजवाचक सर्वनाम।

पुरुषवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम का प्रयोग वक्ता या लेखक द्वारा स्वयं अपने लिए अथवा किसी अन्य के लिए किया जाता है, वह 'पुरुषवाचक सर्वनाम' कहलाता है। पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं-

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला स्वयं के लिए करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहा जाता हैं।

जैसे - मैं, हम, मुझे, हमारा आदि।

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला श्रोता के लिए करे, उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे - तू, तुम, तुझे, तुम्हारा आदि।

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम - जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला श्रोता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के लिए करे, उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- वह, वे, उसने, यह, ये, इसने, आदि।

निश्चयवाचक सर्वनाम - जो (शब्द)सर्वनाम किसी व्यक्ति, वस्तु आदि की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करें वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- 'यह', 'वह', 'वे' सर्वनाम शब्द किसी विशेष व्यक्ति का निश्चयपूर्वक बोध करा रहे हैं, अतः ये निश्चयवाचक सर्वनाम है

उदाहरण -

यह पुस्तक सोनी की है।
ये पुस्तकें रानी की हैं।
वह सड़क पर कौन आ रहा है।
वे सड़क पर कौन आ रहे हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों के द्वारा किसी निश्चित व्यक्ति अथवा वस्तु का बोध न हो वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे- 'कोई' और 'कुछ' आदि सर्वनाम शब्द।

RAMKESHeducation.com

इनसे किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु का निश्चय नहीं हो रहा है। अतः ऐसे शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

उदाहरण

द्वार पर कोई खड़ा है।

कुछ पत्र देख लिए गए हैं और कुछ देखने हैं।

संबंधवाचक सर्वनाम

परस्पर सबंध बतलाने के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- 'जो', 'वह', 'जिसकी', 'उसकी', 'जैसा', 'वैसा' आदि।

उदाहरण

जो सोयेगा, सो खोयेगा; जो जागेगा, सो पावेगा।

जैसी करनी, तैसी पार उतरनी।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम संज्ञा शब्दों के स्थान पर भी आते है और वाक्य को प्रश्नवाचक भी बनाते हैं, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे- क्या, कौन आदि।

उदाहरण

तुम्हारे घर कौन आया है?

दिल्ली से क्या मँगाना है?

निजवाचक सर्वनाम

जहाँ स्वयं के लिए 'आप', 'अपना' अथवा 'अपने', 'आप' शब्द का प्रयोग हो वहाँ निजवाचक सर्वनाम होता है। इनमें 'अपना' और 'आप' शब्द उत्तम, पुरुष मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के (स्वयं का) अपने आप का ज्ञान करा रहे शब्द हें जिन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग श्रोता के लिए हो वहाँ यह आदर-सूचक मध्यम पुरुष होता है और जहाँ 'आप' शब्द का प्रयोग अपने लिए हो वहाँ निजवाचक होता है।

उदाहरण

राम अपने दादा को समझाता है।

श्यामा आप ही दिल्ली चली गई।

राधा अपनी सहेली के घर गई है।

सीता ने अपना मकान बेच दिया है।

सर्वनाम शब्दों के विशेष प्रयोग

आप, वे, ये, हम, तुम शब्द बहुवचन के रूप में हैं, किन्तु आदर प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग एक व्यक्ति के लिए भी किया जाता है।

'आप' शब्द स्वयं के अर्थ में भी प्रयुक्त हो जाता है।

जैसे- मैं यह कार्य आप ही कर लूँगा।

RAMKESHeducation.com

विशेषण - संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, परिमाण आदि) बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं। जैसे - बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुन्दर, कायर, टेढ़ा-मेढ़ा, एक, दो आदि।

विशेष्य

जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाए वह विशेष्य कहलाता है।
यथा- गीता सुन्दर है। इसमें 'सुन्दर' विशेषण है और 'गीता' विशेष्य है।
विशेषण शब्द विशेष्य से पूर्व भी आते हैं और उसके बाद भी।

पूर्व में, जैसे-

थोड़ा-सा जल लाओ।
एक मीटर कपड़ा ले आना।

बाद में, जैसे-

यह रास्ता लंबा है।
खीरा कड़वा है।

विशेषण के भेद

विशेषण के चार भेद हैं-

1. गुणवाचक।
2. परिमाणवाचक।
3. संख्यावाचक।
4. संकेतवाचक अथवा सार्वनामिक।

गुणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण-दोष का बोध हो वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-
भाव ,रंग ,दशा ,आकार

परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अथवा नाप-तोल का ज्ञान हो वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
परिमाणवाचक विशेषण के दो उपभेद है-

(1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण- जिन विशेषण शब्दों से वस्तु की निश्चित मात्रा का ज्ञान हो। जैसे-
(क) मेरे सूट में साढ़े तीन मीटर कपड़ा लगेगा। (ख) दस किलो चीनी ले आओ। (ग) दो लिटर दूध गरम करो।

RAMKESHeducation.com

(2) **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण-** जिन विशेषण शब्दों से वस्तु की अनिश्चित मात्रा का ज्ञान हो।

जैसे-

(क) थोड़ी-सी नमकीन वस्तु ले आओ। (ख) कुछ आम दे दो। (ग) थोड़ा-सा दूध गरम कर दो।

संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे - एक, दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों आदि।

संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद हैं-

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे - एक, दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों आदि।

संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद हैं-

निश्चित संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध हो।

जैसे - दो पुस्तकें मेरे लिए ले आना।

निश्चित संख्यावाचक के निम्नलिखित चार भेद हैं -

(क) गणवाचक - जिन शब्दों के द्वारा गिनती का बोध हो।

जैसे-

(1) एक लड़का स्कूल जा रहा है।

(2) पच्चीस रुपये दीजिए।

(3) कल मेरे यहाँ दो मित्र आएँगे।

(4) चार आम लाओ।

(ख) क्रमवाचक - जिन शब्दों के द्वारा संख्या के क्रम का बोध हो।

जैसे-

(1) पहला लड़का यहाँ आए।

(2) दूसरा लड़का वहाँ बैठे।

(3) राम कक्षा में प्रथम रहा।

(4) श्याम द्वितीय श्रेणी में पास हुआ है।

(ग) आवृत्तिवाचक - जिन शब्दों के द्वारा केवल आवृत्ति का बोध हो।

जैसे-

(1) मोहन तुमसे चौगुना काम करता है।

(2) गोपाल तुमसे दुगुना मोटा है।

(घ) समुदायवाचक - जिन शब्दों के द्वारा केवल सामूहिक संख्या का बोध हो।

जैसे-

RAMKESHeducation.com

(1) तुम तीनों को जाना पड़ेगा।

(2) यहाँ से चारों चले जाओ।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध न हो।

जैसे-कुछ बच्चे पार्क में खेल रहे हैं।

संकेतवाचक विशेषण

जो सर्वनाम संकेत द्वारा संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण की अवस्थाएँ - विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। विशेषता बताई जाने वाली वस्तुओं के गुण-दोष कम-ज़्यादा होते हैं। गुण-दोषों के इस कम-ज़्यादा होने को तुलनात्मक ढंग से ही जाना जा सकता है।

तुलना की दृष्टि से विशेषणों की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ होती हैं-

1. मूलावस्था
2. उत्तरावस्था
3. उत्तमावस्था

मूलावस्था

मूलावस्था में विशेषण का तुलनात्मक रूप नहीं होता है। वह केवल सामान्य विशेषता ही प्रकट करता है। जैसे-

1. सावित्री सुंदर लड़की है।
2. सुरेश अच्छा लड़का है।
3. सूर्य तेजस्वी है।

उत्तरावस्था

जब दो व्यक्तियों या वस्तुओं के गुण-दोषों की तुलना की जाती है तब विशेषण उत्तरावस्था में प्रयुक्त होता है। जैसे-

1. रवीन्द्र चेतन से अधिक बुद्धिमान है।
2. सविता रमा की अपेक्षा अधिक सुन्दर है।

उत्तमावस्था

उत्तमावस्था में दो से अधिक व्यक्तियों एवं वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक अथवा सबसे कम बताया गया है।

जैसे-

1. पंजाब में अधिकतम अन्न होता है।
2. संदीप निकृष्टतम बालक है।

क्रिया

क्रिया की परिभाषा - जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना समझा जाय, उसे क्रिया कहते हैं ।

जैसे - खाना, पीना, गाना , रहना, जाना आदि । उदाहरण-

1 राम खाना खाता है।

2 घोड़ा दौड़ता है।

3 तुम स्कूल जाते हो

क्रिया के दो भेद हैं :-

1- **सकर्मक क्रिया :-** जो क्रिया कर्म के साथ आती है अर्थात जब क्रिया को कर्म की आवश्यकता होती है तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं !

जैसे -- राकेश क्रिकेट खेलता है !

सीता खाना पकाती है!

2 -अकर्मक क्रिया --जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं होती है अर्थात जहाँ कर्म का आभाव होता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं ।

जैसे -- राधा नाचती है। बच्चे खेलते हैं।

रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद है :-

1- सामान्य क्रिया :-जब वाक्य में केवल एक क्रिया का प्रयोग होता है !

जैसे - तुम चलो , मोहन पढ़ा आदि !

2- **संयुक्त क्रिया :-** दो या दो से अधिक क्रियाओं के मेल से बनी क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ होती है !

जैसे - मैंने खाना खा लिया। तुम घर चले जाओ।

3- **नामधातु क्रियाएँ :-** क्रिया को छोड़कर दुसरे शब्दों (संज्ञा , सर्वनाम , एवं विशेषण) से जो धातु बनते है , उन्हें नामधातु क्रिया कहते है।

जैसे - अपना - अपनाना , गरम - गरमाना आदि

4- **प्रेरणार्थक क्रिया :-** जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य से करवाता है , उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

जैसे-- मैंने पत्र लिखवाया ।

उसने खाना खिलवाया ।

सफने उसे हंसाया ।

RAMKESHeducation.com

5- **पूर्वकालिक क्रिया :-** जब कोई कर्ता एक क्रिया समाप्त करके दूसरी क्रिया करता है तब पहली क्रिया ' पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।
जैसे - वे पढ़कर चले गये ।
मैं दौड़कर जाऊँगा ।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण सार्थक शब्दों के आठ भेदों में एक भेद है।
व्याकरण में क्रियाविशेषण एक अविकारी शब्द है।
जिन अविकारी शब्दों से क्रिया की विशेषता का बोध होता है, वे क्रियाविशेषण कहलाते हैं।
क्रियाविशेषण के अर्थ के अनुसार पाँच भेद होते हैं- स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक, दिशावाचक और रीतिवाचक।

स्थानवाचक

जो अविकारी शब्द किसी क्रिया के व्यापार-स्थान का बोध कराते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे- यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, तहाँ, सामने, नीचे, ऊपर, आगे, भीतर, बाहर आदि।

कालवाचक

जो अविकारी शब्द किसी क्रिया के व्यापार का समय बतलाते हैं, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे- आज, कल, परसों, पहले, पीछे, अभी, कभी, सदा, अब तक, अभी-अभी, लगातार, बार-बार, प्रतिदिन

परिमाणवाचक

जो अविकारी शब्द किसी क्रिया के परिमाण अथवा निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे- बहुत, अधिक, पूर्णतया, सर्वथा, कुछ, थोड़ा, काफ़ी, केवल, यथेष्ट, इतना, उतना, कितना, थोड़ा-थोड़ा, तिल-तिल, एक-एक करके आदि।

दिशावाचक

जो अविकारी शब्द किसी क्रिया की दिशा का बोध कराते हैं, उन्हें दिशावाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे- दायें-बायें, इधर-उधर, किधर, एक ओर, चारों तरफ़ आदि।

रीतिवाचक - जो अविकारी शब्द किसी क्रिया की रीति का बोध कराते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे- सचमुच, ठीक, अवश्य, कदाचित्, यथासम्भव, ऐसे, वैसे, सहसा, तेज़, ठीक, सच, अत:, इसलिए, क्योंकि, नहीं, मत, कदापि, तो, हो, मात्र, भर आदि।

RAMKESHeducation.com

वाच्य

वाच्य की परिभाषा

क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है।
इनमें किसी के अनुसार क्रिया के पुरुष, वचन आदि आए हैं।
इस परिभाषा के अनुसार वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन चाहे तो कर्ता के अनुसार होंगे अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार।

वाच्य के प्रयोग

वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का अध्ययन 'प्रयोग' कहलाता है।
ऐसा देखा जाता है कि वाक्य की क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कभी कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होता है, तो कभी कर्म के लिंग-वचन-पुरुष के अनुसार, लेकिन कभी-कभी वाक्य की क्रिया कर्ता तथा कर्म के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग तथा अन्यपुरुष होती है; ये ही प्रयोग है।

प्रयोग के प्रकार

'प्रयोग' तीन प्रकार के होते हैं-
(क) कर्तरि प्रयोग
(ख) कर्मणि प्रयोग
(ग) भावे प्रयोग
(क) कर्तरि प्रयोग- जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों तब कर्तरि प्रयोग होता है;
जैसे- मोहन अच्छी पुस्तकें पढता है।
(ख) कर्मणि प्रयोग- जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों तब कर्मणि प्रयोग होता है;
जैसे- सीता ने पत्र लिखा।
(ग) भावे प्रयोग- जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग तथा अन्य पुरुष हों तब भावे प्रयोग होता है;
जैसे- मुझसे चला नहीं जाता। सीता से रोया नहीं जाता।

वाच्य के भेद

RAMKESHeducation.com

उपर्युक्त प्रयोगों के अनुसार वाच्य के तीन भेद हैं-

(1) कर्तृवाच्य

(2) कर्मवाच्य

(3) भाववाच्य

(1) कर्तृवाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो।

जैसे- राम पुरतक पढ़ता है, मैंने पुस्तक पढ़ी।

(2) कर्मवाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो।

जैसे- पुस्तक पढ़ी जाती है; आम खाया जाता है।

यहाँ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार रूपान्तररित न होकर कर्म के अनुसार परिवर्तित हुई हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अँगरेजी की तरह हिन्दी में कर्ता के रहते हुए कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता; जैसे- 'मैं दूध पीता हूँ' के स्थान पर 'मुझसे दूध पीया जाता है' लिखना गलत होगा। हाँ, निषेध के अर्थ में यह लिखा जा सकता है- मुझसे पत्र लिखा नहीं जाता; उससे पढ़ा नहीं जाता।

(3) भाववाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो।

जैसे- मोहन से टहला भी नहीं जाता। मुझसे उठा नहीं जाता। धूप में चला नहीं जाता।

अव्यय

अव्यय

ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष और कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता है दूसरे शब्दों में इन शब्दों का अर्थ कभी भी बदलता नहीं है। ऐसे शब्दों को अव्यय कहते हैं ।

अव्यय के भेद

अव्यय निम्नलिखित चार प्रकार के होते है -

(1) क्रियाविशेषण

(2) संबंधबोधक

(3) समुच्चयबोधक

(4) विस्मयादिबोधक

(1) क्रियाविशेषण :- जिन शब्दों से क्रिया, विशेषण या दूसरे क्रियाविशेषण की विशेषता प्रकट हो, उन्हें 'क्रियाविशेषण' कहते है।

दूसरे शब्दो में- जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते है, उन्हें क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसे- राम धीरे-धीरे टहलता है; राम वहाँ टहलता है; राम अभी टहलता है।

इन वाक्यों में 'धीरे-धीरे', 'वहाँ' और 'अभी' राम के 'टहलने' (क्रिया) की विशेषता बतलाते हैं। ये क्रियाविशेषण अविकारी विशेषण भी कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त, क्रियाविशेषण दूसरे क्रियाविशेषण की भी विशेषता बताता हैं।

वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में 'बहुत' क्रियाविशेषण है; क्योंकि यह दूसरे क्रियाविशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

क्रिया विशेषण के प्रकार

(1) प्रयोग के अनुसार- (i) साधारण (ii) संयोजक (iii) अनुबद्ध

(2) रूप के अनुसार- (i) मूल क्रियाविशेषण (ii) यौगिक क्रियाविशेषण (iii) स्थानीय क्रियाविशेषण

(3) अर्थ के अनुसार- (i) परिमाणवाचक (ii) रीतिवाचक

(1) 'प्रयोग' के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद

(i) साधारण क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का प्रयोग किसी वाक्य में स्वतन्त्र होता हैं, उन्हें 'साधारण क्रियाविशेषण' कहा जाता हैं।

जैसे- हाय! अब मैं क्या करूँ? बेटा, जल्दी आओ। अरे ! साँप कहाँ गया ?

(ii) संयोजक क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्य से रहता है, उन्हें ' संयोजक क्रियाविशेषण' कहा जाता हैं।

जैसे- जब रोहिताश्र्व ही नहीं, तो मैं ही जीकर क्या करूँगी ! जहाँ अभी समुद्र हैं, वहाँ किसी समय जंगल था।

(iii) अनुबद्ध क्रियाविशेषण- जिन क्रियाविशेषणों के प्रयोग अवधारण (निश्र्चय) के लिए किसी भी शब्दभेद के साथ होता हो, उन्हें 'अनुबद्ध क्रियाविशेषण' कहा जाता है।

जैसे- यह तो किसी ने धोखा ही दिया है। मैंने उसे देखा तक नहीं।

(2) रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन भेद

(i) मूल क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो किसी दूसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते, 'मूल क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- ठीक, दूर, अचानक, फिर, नहीं।

(ii) यौगिक क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण,जो किसी दूसरे शब्द में प्रत्यय या पद जोड़ने पर बनते हैं, 'यौगिक क्रियाविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे- मन से, जिससे, चुपके से, भूल से, देखते हुए, यहाँ तक, झट से, वहाँ पर।

यौगिक क्रियाविशेषण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, धातु और अव्यय के मेल से बनते हैं।

यौगिक क्रियाविशेषण नीचे लिखे शब्दों के मेल से बनते हैं-

RAMKESHeducation.com

(i) संज्ञाओं की द्विरुक्ति से- घर-घर, घड़ी-घड़ी, बीच-बीच, हाथों-हाथ।
(ii) दो भिन्न संज्ञाओं के मेल से- दिन-रात, साँझ-सबेरे, घर-बाहर, देश-विदेश।
(iii) विशेषणों की द्विरुक्ति से- एक-एक, ठीक-ठीक, साफ-साफ।
(iv) क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से- धीरे-धीरे, जहाँ-तहाँ, कब-कब, कहाँ-कहाँ।
(v) दो क्रियाविशेषणों के मेल से- जहाँ-तहाँ, जहाँ-कहीं, जब-तब, जब-कभी, कल-परसों, आस-पास।
(vi) दो भिन्न या समान क्रियाविशेषणों के बीच 'न' लगाने से- कभी-न-कभी, कुछ-न-कुछ।
(vii) अनुकरण वाचक शब्दों की द्विरुक्ति से- पटपट, तड़तड़, सटासट, धड़ाधड़।
(viii) संज्ञा और विशेषण के योग से- एक साथ, एक बार, दो बार।
(ix) अव्यय और दूसरे शब्दों के मेल से- प्रतिदिन, यथाक्रम, अनजाने, आजन्म।
(x) पूर्वकालिक कृदन्त और विशेषण के मेल से- विशेषकर, बहुतकर, मुख्यकर, एक-एककर।

(iii) स्थानीय क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषण, जो बिना रूपान्तर के किसी विशेष स्थान में आते हैं, 'स्थानीय क्रियाविशेषण' कहलाते हैं। जैसे- वह अपना सिर पढ़ेगा।

(3) 'अर्थ' के अनुसार क्रियाविशेषण के भेद

(i) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- जो शब्द क्रिया परिमाण या माप प्रकट करते है उन्हें 'परिमाणवाचक क्रियाविशेषण' कहते है।
जैसे -बहुत, थोड़ा, अधिक, कम, छोटा, कितना आदि
उदाहरण- आप अधिक बोलते हो।
यहाँ अधिक शब्द क्रिया (बोलने)की माप प्रकट करता है। इसलिए अधिक शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण है।

(क) अधिकताबोधक- बहुत, अति, बड़ा, बिलकुल, सर्वथा, खूब, निपट, अत्यन्त, अतिशय।
(ख) न्यूनताबोधक- कुछ, लगभग, थोड़ा, टुक, प्रायः, जरा, किंचित्।
(ग) पर्याप्तिवाचक- केवल, बस, काफी, यथेष्ट, चाहे, बराबर, ठीक, अस्तु।
(घ) तुलनावाचक- अधिक, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, बढ़कर।
(ड़) श्रेणिवाचक- थोड़ा-थोड़ा, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, तिल-तिल, एक-एककर, यथाक्रम।

(ii) रीतिवाचक क्रियाविशेषण- जो शब्द क्रिया की रीती या ढंग बताते है उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते है।
जैसे- सहसा, वैसे, ऐसे, अचानक आदि।
उदाहरण- कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
यहाँ धीरे-धीरे शब्द क्रिया होने ढंग बता रहा है।

RAMKESHeducation.com

इस क्रियाविशेषण की संख्या गुणवाचक विशेषण की तरह बहुत अधिक है। ऐसे क्रियाविशेषण प्रायः निम्नलिखित अर्थों में आते हैं-

(क) प्रकार- ऐसे, वैसे, कैसे, मानो, धीरे, अचानक, स्वयं, स्वतः, परस्पर, यथाशक्ति, प्रत्युत, फटाफट।

(ख) निश्र्चय- अवश्य, सही, सचमुच, निःसन्देह, बेशक, जरूर, अलबत्ता, यथार्थ में, वस्तुतः, दरअसल।

(ग) अनिश्र्चय- कदाचित्, शायद, बहुतकर, यथासम्भव।

(घ) स्वीकार- हाँ, जी, ठीक, सच।

(ङ) कारण- इसलिए, क्यों, काहे को।

(च) निषेध- न, नहीं, मत।

(छ) अवधारण- तो, ही, भी, मात्र, भर, तक, सा।

लिंग

लिंग की परिभाषा

संज्ञा के जिस रूप से किसी जाति (स्त्री जाति या पुरुष जाति) का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं !

इसके दो भेद होते हैं जिनका विवरण इस प्रकार है

पुल्लिंग

जिस संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है , उसे पुल्लिंग कहते हैं उदाहरण - आदमी, सेठ आदि ! उदाहरण -

ई = बड़ा - बड़ी , भला - भली

इनी = योगी - योगिनी , कमल - कमलिनी

इन = धोबी - धोबिन , तेली - तेलिन

नी = मोर - मोरनी , चोर - चोरनी

आनी = जेठ - जेठानी , देवर - देवरानी

आइन = ठाकुर - ठकुराइन , पंडित - पंडिताइन

इया = बेटा - बिटिया , लोटा - लुटिया

कुछ शब्द अर्थ की द्रष्टि से समान होते हुए भी लिंग की द्रष्टि से भिन्न होते हैं ! उनका उचित प्रयोग करना चाहिए ! उदाहरण -

पुल्लिंग - स्त्रीलिंग

1. कवि - कवयित्री
2. विद्वान - विदुषी
3. नेता - नेत्री

RAMKESHeducation.com

4. महान - महती
5. साधु - साध्वी

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसके सम्बन्ध का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं। हिन्दी में आठ कारक होते हैं विभक्ति या परसर्ग-जिन प्रत्ययों से कारकों की स्थितियों का बोध होता है, उन्हें विभक्ति या परसर्ग कहते हैं। आठ कारकों के विभक्ति चिह्न या परसर्ग इस प्रकार होते हैं

1. कर्ता – ने
2. कर्म – को
3. करण – से, के साथ, के द्वारा
4. संप्रदान – के लिए, को
5. अपादान – से (पृथक)
6. संबंध – का, के, की
7. अधिकरण – में, पर
8. संबोधन – हे! भो! अरे!

कर्ता कारक

क्रिया करने वाले को कर्ता कहते हैं। यह स्वतंत्र होता है। इसमें 'ने' विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे- राजेन्द्र ने पत्र भेजा है। मैंने भोजन किया है।
कहीं-कहीं वाक्य में कर्ता कारक के 'ने' चिह्न का लोप भी रहता है। जैसे- राम रोटी खाता है। मैं जाता हूँ।

कर्म कारक

जिस पर क्रिया के व्यापार का प्रभाव पड़ता है। उसे कर्म कारक कहते हैं। इसमें 'को' विभक्ति चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे- गोपाल ने राधा को बुलाया है। उसने पानी को छाना है।
कुछ वाक्यों में कर्म कारक के चिह्न 'को' का लोप भी रहता है। जैसे- श्याम पुस्तक पढ़ता है। मेरे द्वारा यह कार्य हुआ है।

करण कारक

जिसके द्वारा क्रिया होती है, उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक के विभक्ति चिह्न 'से, द्वारा' हैं। जैसे- कलम से पत्र लिखा है। मेरे द्वारा कार्य हुआ है।

सम्प्रदान कारक

RAMKESHeducation.com

जिसके लिए क्रिया की जाती है अथवा जिसे कोई वस्तु दी जाती है, वहाँ सम्प्रदान कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न 'के लिए' और 'को' हैं। जैसे- भूखे के लिए रोटी लाओ। राज ज्ञानू को पुस्तक देता है। मैं बाज़ार को जा रहा हूँ।

अपादान कारक

जहाँ एक संज्ञा का दूसरी संज्ञा से अलग होना सूचित होता है, वहाँ अपादान कारक होता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' है। जैसे- पेड़ से पत्ते गिरे। लड़का छत से गिरा है। में बैंक से रुपया लाया हूँ।

सम्बन्ध कारक

जहाँ एक संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से सूचित होता है, वहाँ सम्बन्ध कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न का, की, के; रा, री, रे; ना, नी, ने हैं। जैसे- राम का लड़का, श्याम की लड़की, गीता के बच्चे। मेरा लड़का, मेरी लड़की, हमारे बच्चे। अपना लड़का, अपना लड़की, अपने लड़के।

अधिकरण कारक

जहाँ कोई संज्ञा या सर्वनाम किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम का आधार हो, वहाँ अधिकरण कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न 'में, पर' हैं। जैसे- महल में दीपक जल रहा है। छप पर कपड़े सूख रहे हैं। मुझमें शक्ति बहुत कम है।

सम्बोधन कारक

जहाँ पुकारने, चेतावनी देने या ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी को सम्बोधित किया जाता है, वहाँ सम्बोधन कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न 'हे, अरे, अजी' हैं। जैसे- हे ईश्वर! कृपा करो। अरे मोहन! इधर आओ। अजी! तुम उसे क्या मारोगे?

काल

समय। क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चले उसे काल कहते हैं। जैसे – सुनील गीता पढ़ता है

,प्रदीप पढ़ रहा है ,रमेश कल दिल्ली जाएगा

काल के तीन प्रकार है

1. भूतकाल
2. वर्तमानकाल
3. भविष्यत काल

भूतकाल

RAMKESHeducation.com

क्रिया के जिस रूप से कार्य का बीते हुए समय में सम्पन्न होने का पता चले ,उसे भूतकाल कहते है |जैसे – राम ने रावण का वध किया था , में गुजरात गया था ,लड़का चला गया ,नाना जी कहानी सुना रहे थे

इन वाक्यों में किया था ,गया था ,गया तथा रहे थे यह शब्द बीते हुए समय के बारे में बताते है इसे भूतकाल कहते है

भूतकाल के छः प्रकार है

1. सामान्य भूतकाल
2. आसन्न भूतकाल
3. पूर्ण भूतकाल
4. अपूर्ण भूतकाल
5. संदिग्ध भूतकाल
6. हेतुहेतुमद् भूतकाल

सामान्य भूतकाल

जिस क्रिया से भूतकाल में क्रिया के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा में होने का संकेत मिलता हो ,उसे सामान्य भूतकाल कहते है |जैसे मैंने गाना गाया ,नानी ने कहानी सुनाई ,खिलाड़ी खेलने गए

इन वाक्यों में गाया ,सुनाई और गए इन शब्दों से से सामान्य रूप से बीते समय का पूरा होने का पता चलता है |अतः यह सामान्य भूतकाल है

आसन्न भूतकाल

जिस भूतकाल की क्रिया में कार्य के अभी – अभी या निकट भूतकाल में सम्पन्न होने का पता चले ,उसे आसन्न भूतकाल कहते है |जैसे – मैंने सेब खाया है ,में अभी हिसार से आया हूँ , नानी ने कहानी सुनाई है

इन वाक्यों से अभी – अभी क्रियाएँ का पता चलता है इसलिए यह आसन्न भूतकाल है

पूर्ण भूतकाल

भूतकाल की जिस क्रिया से यह पता चले कि कार्य को समाप्त हुए बहुत समय बीत चूका हो ,उसे पूर्ण भूतकाल कहते है| जैसे – भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ था ,वह हिसार जा चूका था , बच्चा आया था

अपूर्ण भूतकाल

भूतकाल की जिस क्रिया से यह पता चले कि कार्य भूतकाल में शुरू हो गया था ,किन्तु कार्य के समाप्त होने का पता न चलता हो ,उसे अपूर्ण भूतकाल कहते है जैसे – सुनीता गा रही थी ,सुनील पढ़ रहा था ,बच्चे खेल रहे थे , राहुल लिख रहा था

RAMKESHeducation.com

संदिग्ध भूतकाल

भूतकाल की क्रिया के जिस रूप से अतीत के कार्य के होने या करने पर संदेह पाया जाए ,उसे संदिग्ध भूतकाल कहते है |जैसे – सुनील हिसार गया होगा , मीरा ने स्कुल गई होगी , वह क्रिकेट खेले होंगे

जिस वाक्य के अंत में गा ,गे ,गी आदि लगे हों , इससे कार्य के करने में संदेह का मालूम होता है ,इसे संदिग्ध भूतकाल कहते है |

हेतुहेतुमद् भूतकाल

भूतकाल की जिस क्रिया से यह पता चले कि भूतकाल में कार्य हो सकता था ,किन्तु दूसरे कार्य के कारण नहीं हो सका ,उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल कहते है |जैसे –सुरेश मेहनत करता तो सफल हो जाता, मैं आगरा जाती तो ताजमहल देखती , यदि वर्षा होती, तो फसल अच्छी होती

वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से चल रहे समय का पता चले अथवा क्रिया व्यापार का वर्तमान समय में पता चले ,उसे वर्तमान काल कहते है |जैसे – मोहन पढ़ रहा है , राजू गाता है ,आप क्या कर रहे हो

वर्तमान काल के तीन प्रकार है

1. सामान्य वर्तमानकाल
2. अपूर्ण वर्तमानकाल
3. संदिग्ध वर्तमानकाल

सामान्य वर्तमानकाल

जिस क्रिया से वर्तमान काल में क्रिया के सामान्य रूप में होने का पता चले ,उसे सामान्य वर्तमान काल कहते है |जैसे – सुनील लिखती है,सीता पढ़ती है,बच्चे खलते है, मैं गाता हूँ

जिस वाक्य के अंत में ता है ,ते है,ता हूँ ,ती हूँ आदि का प्रयोग होता हो ,वहाँ सामान्य वर्तमान काल होता है

अपूर्ण वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य वर्तमान काल में शुरू हो चूका है और अभी चल रहा है ,उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते है |जैसे – रमेश लिख रहा है,वे गीत गा रहे हैं, अनीता गीत गा रही है, मैं नाच रहा हूँ

जिस वाक्य के अंत में रहा है ,रही है, रहा हूँ,रहे है आदि लगे हो वहाँ अपूर्ण वर्तमान काल होता है

RAMKESHeducation.com

संदिग्ध वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया के होने या करने पर संदेह पाया जाता है ,उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते है |जैसे – रमेश खेत में पानी लगाता होगा ,सविता पत्र लिखती होगी ,बच्चे नाचते होंगे,टीना पढ़ती होगी

जिस वाक्य के अंत में ता होगा ,ती होगी ,ते होंगे आदि लगे हो ,वहाँ संदिग्ध वर्तमान काल होता है

भविष्यत

क्रिया के जिस रूप से आगे आने वाले समय का पता चले ,भविष्यत काल कहते है |जैसे – हम कल दिल्ली जाएँगे ,रमेश कल घर जाएगा ,वह किताब पढ़ेगा

इन वाक्यों की क्रियाएँ से पता चलता है कि ये सब कार्य आने वाले समय में पूरे होंगे। अतः ये भविष्यत काल की क्रियाएँ हैं.

भविष्यत काल के तीन प्रकार है

1. सामान्य भविष्यत काल
2. संभाव्य भविष्यत काल
3. हेतु-हेतुमद् भविष्यत काल

सामान्य भविष्यत काल

इसमें क्रिया का सामान्य रूप से कार्य के भविष्य में होने का पता चलाता है ,उसे सामान्य भविष्यत काल कहते है |जैसे –,रोहित पुस्तक बेचेगा,वह खाना खाएगी,बच्चे खेलने जाएँगे

जिन वाक्य के अंत में ए.गा ,ए.गी ,ए.गे आदि लगे हो ,वहाँ सामान्य भविष्यत काल होता है

संभाव्य भविष्यत काल

जिस क्रिया से आगे कार्य के होने का संदेह या संभवना हो ,उसे संभाव्य भविष्यत काल कहते है |जैसे – शायद कल सुनील आगरा जाए ,परीक्षा में शायद मुझे अच्छे अंक प्राप्त हों ,शायद आज वर्षा हो

इन वाक्यों में क्रियाओं का निश्चित पता नहीं चलता ,इसलिए यह संभाव्य भविष्यत काल है

हेतु-हेतुमद् भविष्यत काल

क्रिया का वह रूप जिससे एक कार्य का होना किसी दूसरे भविष्यत काल की क्रिया के पूरी होने पर निर्भर हो ,उसे हेतु-हेतुमद् भविष्यत काल कहते है |जैसे – अगर तुम

RAMKESHeducation.com

मेहनत करोगे ,तो अवश्य सफल हो जाओगे, वह कमाये तो मैं खाऊँ, यदि छुट्टियाँ होंगी ,तो मैं आगरा जाऊँगा

इसमें एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर करती है |अतः यह हेतु-हेतुमद् भविष्यत काल होता है

उपसर्ग

जो शब्दांश उसके आरम्भ में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन करते है ,उन्हें उपसर्ग कहते है अर्थात भाषा के वे छोटे से छोटा सार्थक खंड ,जो शब्द के आरंभ में लगकर नए शब्द का निर्माण करता है ,उसे उपसर्ग कहते है | उपसर्गो का अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता, जब किसी मूल शब्द के साथ कोई उपसर्ग जुड़ता है,तो उसके अर्थ में परिवर्तन होता है या विशेषता उत्पन्न होती है |

जैसे –उप+कार = उपकार,,आ+गमन = आगमन,वि+नाश = विनाश, सम्+हार = संहार

उपसर्ग चार प्रकार के है

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. अरबी – फारसी के उपसर्ग
4. अंग्रेजी के उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग

1 **अति,** अधिक - अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय
2 **अधि,** ऊपर, श्रेष्ठ - अधिकार, अधिपति, अधिनायक
3 **अनु,** पीछे, समान - अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन
4 **अप,** बुरा, हीन - अपयश, अपमान, अपकार
5 **अभि,** सामने, चारों ओर, पास - अभियान, अभिषेक, अभिनय, अभिमुख
6 **अव,** हीन, नीच - अवगुण, अवनति, अवतार, अवनति
7 **आ,** तक, समेत - आजीवन, आगमन
8 **उत्,** ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर - उद्गम, उत्कर्ष, उत्तम, उत्पत्ति
9 **उप,** निकट, सदृश, गौण - उपदेश, उपवन, उपमंत्री, उपहार
10 **दुर्,** बुरा, कठिन - दुर्जन, दुर्गम, दुर्दशा, दुराचार
11 **दुस्,** बुरा, कठिन - दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुष्कर
12 **निर्,** बिना, बाहर, निषेध - निरपराध, निर्जन, निराकार, निर्गुण
13 **निस्,** रहित, पूरा, विपरित - निस्सार, निस्तार, निश्चल, निश्चित

RAMKESHeducation.com

14 **नि,** निषेध, अधिकता, नीचे - निवारण, निपात, नियोग, निषेध
15 **परा,** उल्टा, पीछे - पराजय, पराभव, परामर्श, पराक्रम
16 **परि,** आसपास, चारों तरफ - परिजन, परिक्रम, परिपूर्ण, परिणाम
17 **प्र,** अधिक, आगे - प्रख्यात, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति
18 **प्रति,** उलटा, सामने, हर एक - प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक
19 **वि,** भिन्न, विशेष - विदेश, विलाप, वियोग, विपक्ष
20 **सम्,** उत्तम, साथ, पूर्ण - संस्कार, संगम, संतुष्ट, संभव
21 **सु,** अच्छा, अधिक - सुजन, सुगम, सुशिक्षित, सुपात्र

हिन्दी के उपसर्ग

1 **अ,** अभाव, निषेध - अछूता, अथाह, अटल
2 **अन,** अभाव, निषेध - अनमोल, अनबन, अनपढ़
3 **कु,** बुरा - कुचाल, कुचैला, कुचक्र
4 **दु,** कम, बुरा - दुबला, दुलारा, दुधारू
5 **नि,** कमी - निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा
6 **औ,** हीन, निषेध - औगुन, औघर, औसर, औसान
7 **भर,** पूरा - भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार
8 **सु,** अच्छा - सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
9 **अध,** आधा - अधपका, अधकच्चा, अधमरा, अधकचरा
10 **उन,** एक कम - उनतीस, उनसठ, उनहत्तर, उंतालीस
11 **पर,** दूसरा, बाद का - परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
12 **बिन,** बिना, निषेध - बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

उपसर्ग, अर्थ, शब्द
1 **कम,** थोड़ा, हीन - कमज़ोर, कमबख़्त, कमअक्ल
2 **खुश,** अच्छा - खुशनसीब, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू
3 **गैर,** निषेध - गैरहाज़िर, गैरक़ानूनी, गैरमुल्क, गैर-ज़िम्मेदार
4 **ना,** अभाव - नापसंद, नासमझ, नाराज़, नालायक
5 **ब,** और, अनुसार - बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
6 **बा,** सहित - बाकायदा, बाइज़्ज़त, बाअदब, बामौका
7 **बद,** बुरा - बदमाश, बदनाम, बदक़िस्मत,बदबू
8 **बे,** बिना - बेईमान, बेइज़्ज़त, बेचारा, बेवकूफ़

RAMKESHeducation.com

9 **ला,** रहित - लापरवाह, लाचार, लावारिस, लाजवाब

10 **सर,** मुख्य - सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार

11 **हम,** समान, साथवाला - हमदर्दी, हमराह, हमउम्र, हमदम

12 **हर,** प्रत्येक - हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार

अंग्रेज़ी के उपसर्ग

1 **सब,** अधीन, नीचे - सब-जज सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर

2 **डिप्टी,** सहायक - डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर

3 **वाइस,** सहायक - वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-प्रेसीडेंट

4 **जनरल,** प्रधान - जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी

5 **चीफ़,** प्रमुख - चीफ़-मिनिस्टर, चीफ़-इंजीनियर, चीफ़-सेक्रेटरी

6 **हेड,** मुख्य - हेडमास्टर, हेड क्लर्क

प्रत्यय

शब्दांश या अव्यय जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसका विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।

उदाहरण: नाटक + कार =नाटककार , चाट + नी = चटनी ,झगड़ + आलू = झगड़ालू

हिन्दी में मुख्यतः दो प्रकार के प्रत्यय होते है:-

1 कृदन्त प्रत्य

2 तद्धित प्रत्यय

RAMKESHeducation.com

कृदन्त प्रत्यय

वे प्रत्यय जो क्रिया पद के मूल रूप के अन्त में लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं कृदन्त (कृत) प्रत्यय कहलाते हैं।

कृदन्त प्रत्यय 5 प्रकार के होते हैं:-

1 कर्तावाचक

2 कर्मवाचक

3 करणवाचक

4 भाववाचक

5 क्रियाबोधक

1 कर्तावाचक

वे प्रत्यय जो कर्तावाचक शब्द बनाते हैं, कर्तावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - अक =लेखक,गायक,घातक,वाचक ,अक्कड़ = पियक्कड़, भुलक्कड़, घुमक्कड़ ,हार = होनहार, राखनहार, पालनहार, तारणहार , कार= नाटककार, पत्रकार, कलाकार, चित्रकार

2. कर्मवाचक

वे प्रत्यय जो कर्म के अर्थ को प्रकट करते हैं, कर्मवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - औना = खिलौना, घिनौना, बिछौना, ति = शक्ति, भक्ति, रिक्ति, मुक्ति , आई = कमाई, चढ़ाई, लड़ाई, पढ़ाई

3. करणवाचक

वे प्रत्यय जो क्रिया के करण (साधन) को बताते हैं, करणवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - आ = झूला, ठेला, मेला, रैला ,न = बेलन, बन्धन, खुरचन, ताड़न , नी = कतरनी, छलनी, धौंकनी, सूँघनी

4. भाववाचक

वे प्रत्यय जो क्रिया से भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं, भाववाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण :- आई = लड़ाई, कटाई, चढ़ाई, सिलाई ,आन = मिलान, चढान, उठान, उड़ान , आवट = सजावट, लिखावट, मिलावट , अन = चलन, मनन, मिलन, फिसलन

5. क्रियाबोधक

वे प्रत्यय जो क्रिया का बोध कराते हैं, क्रियाबोधक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - हुआ = चलता हुआ, पढ़ता हुआ, सुनता हुआ , आहट = घबराहट, चिल्लाहट, हड़बड़ाहट ,ता = बहता, मरता, गाता, पढ़ता

तद्धित प्रत्यय

वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अन्त में लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्दों को तद्धितान्त शब्द कहते हैं। तद्धित प्रत्यय 6 प्रकार के होते हैं:-

1 कर्तृवाचक

2 भाववाचक

3 सम्बन्धवाचक

4 अप्रत्यवाचक

5 ऊनतावाचक

6 स्त्रीबोधक

RAMKESHeducation.com

1. कर्तृवाचक

वे प्रत्यय जो कर्तृवाचक शब्द बनाते हैं, कर्तृवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - आर = लुहार, सुनार, सुथार, कुम्हार, इया = मुखिया, रसिया ,ई = भेदी, देहाती, तेली, धोबी

2. भाववाचक

वे प्रत्यय जो भाववाचक शब्दों का निर्माण करते हैं, भाववाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - ता = सुन्दरता, मूर्खता, मनुष्यता, पन = बचपन, लड़कपन, छुटपन ,आस = खटास, मिठास

3. सम्बन्धवाचक

वे प्रत्यय जो सम्बन्धवाचक शब्दों का निर्माण करते हैं, सम्बन्धवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - एरा = चचेरा, ममेरा, फुफेरा ,ईला = रसीला, रंगीला, भड़कीला ,इक = शारीरिक, मानसिक, सामाजिक

4. अप्रत्यवाचक

वे प्रत्यय जो संस्कृत के प्रभाव के कारण संज्ञा के साथ लगने पर संतान का बोध कराते है, अप्रत्यवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : -ई = जानकी, मैथिली, द्रोपदी, गांधारी ,ई = दाशरथि, वाल्मीकि, सौमित्रि ,एय = कौन्तेय, गांगेय, भागिनेय

5. ऊनतावाचक

वे प्रत्यय जो लघुता सूचक शब्दों का निर्माण करते हैं, ऊनतावाचक प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - ई = मण्डली, टोकरी, पहाड़ी, घण्टी ,इया = खटिया, लुटिया, डिबिया , ओला = खटोला, संपोला, पटोला

6. स्त्रीबोधक - वे प्रत्यय जो स्त्रीलिंग का बोध कराते हैं, स्त्रीलिंग का बोध प्रत्यय कहलाते हैं। उदाहरण : - आइन = ठकुराइन, मुंशियाइन, पण्डिताइन ,आनी = देवरानी, जेठानी, सेठानी, नौकरानी , आ = सुता, छात्रा, अनुजा, आत्मजा

उर्दू प्रत्यय

हिंदी व्याकरण में उर्दू के कुछ प्रत्यय भी प्रचलित है:-

गर = जादूगर, बाजीगर, कारीगर, सौदागर

दार = दुकानदार, मालदार, हिस्सेदार, थानेदार

इन्दा = परिन्दा, बाशिन्दा, शर्मिन्दा, चुनिन्दा

इश = फरमाइश, पैदाइश, रंजिश

खोर = घूसखोर, जमाखोर, रिश्वतखोर

गाह = ईदगाह, बंदरगाह, दरगाह, आरामगाह

गार = मददगार, यादगार, रोजगार

बन्द = हथियारबन्द, नजरबन्द, मोहरबन्द

मन्द = अकलमन्द, जरूरतमंद, ऐहसानमंद

RAMKESHeducation.com

बाज = नशेबाज, चालबाज, दगाबाज

समास

समास का शाब्दिक अर्थ है – संक्षिप्तीकरण, अर्थात छोटा रूप। जब किन्हीं दो शब्दों या दो से अधिक शब्दों से मिलकर कोई नया और छोटा शब्द बनता है, तो उसे समास कहते हैं।

समास की रचना

समास की उत्पत्ति दो पदों से होती है, जिसमें पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहा जाता है। पूर्वपद और उत्तरपद से मिलकर बना पद 'समस्त पद' या समास कहलाता है। जैसे – राजा का पुत्र अर्थात राजपुत्र, रसोई के लिए घर अर्थात रसोईघर और हाथ के लिए कड़ी अर्थात हथकड़ी।

समास के प्रकार

समास 6 प्रकार के होते हैं –

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द समास
6. बहुब्रीह समास

1. अव्ययीभाव समास

इस समास में शब्द का प्रथम पद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है, इसीलिए इसे अव्ययीभाव समास कहा जाता है।
अव्यय, यानी जिस पद का प्रारूप लिंग, वचन और कारक की स्थिति में समान ही रहे।
उदाहरण के लिए –

प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार
आजन्म = जन्म से लेकर

यहाँ प्रति, यथा, आ आदि कुछ अव्यय हैं। स्त्रीलिंग या पुल्लिंग के साथ प्रयोग करने पर इन शब्दांशों में कोई परिवर्तन नहीं आएगा।

1. **तत्पुरुष समास**

जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहा जाता है। यह कारक से जुड़ा होता है। विग्रह करने पर जो कारक प्रकट होता है, उसी कारक के अनुसार समास का उप-प्रकार निर्धारित किया जाता है। इस समास में दो पदों के बीच कारक को चिन्हित करने वाले शब्दों का लोप हो जाता है, इसीलिए इसे तत्पुरुष समास कहा जाता है।
जैसे :-

तुलसी द्वारा कृत = तुलसीकृत [‘के द्वारा’ का लोप हुआ है – करण तत्पुरुष]
राजा का महल = राजमहल [‘का’ का लोप हुआ है – सम्बन्ध तत्पुरुष]
देश के लिए भक्ति = देशभक्ति
शर से आहत = शराहत
राह के लिए खर्च = राहखर्च

तत्पुरुष समास के आठ प्रकार होते हैं, लेकिन समास विग्रह के कारण ‘कर्ता’ और ‘संबोधन’ को हटा कर इसे 6 प्रकार में ही विभक्त किया जाता है:

कर्म तत्पुरुष समास

जहाँ दो पदों के बीच कर्म कारक चिन्ह छुपा होता है, उसे कर्म तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे: रथचालक – रथ को चलाने वाला, माखनचोर – माखन को चुराने वाला, जनप्रिय – जनता को प्रिय।

करण तत्पुरुष समास

जहाँ दो पदों के बीच करण कारक का बोध होता है, उसे करण तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें करण कारक का चिन्ह ‘के द्वारा’ और ‘से’ होता है।
जैसे: स्वरचित – स्वयं द्वारा रचित, शोकग्रस्त – शोक से ग्रस्त

सम्प्रदान तत्पुरुष समास

RAMKESHeducation.com

इसमें दो पदों के बीच सम्प्रदान कारक छिपा होता है। सम्प्रदान कारक का चिन्ह 'के लिए' है।

जैसे:

विद्यालय =विद्या के लिए आलय (घर)

सभाभवन = सभा के लिए भवन

अपादान तत्पुरुष समास

अपादान तत्पुरुष समास में दो पदों के बीच में अपादान कारक चिन्ह 'से' (विभक्ति के संदर्भ में या अलग होने पर) छिपा होता है।

जैसे:

कामचोर = काम से जी चुराने वाला

दूरागत = दूर से आगत

रणविमुख = रण से विमुख

सम्बन्ध तत्पुरुष समास

उत्तर और पूर्व पद के बीच सम्बन्ध कारक के चिन्हों, जैसे कि 'का', 'की', 'के', 'रा' , 'री', 'रे', 'ना' , 'नी', 'ने' आदि के छुपे होने पर सम्बन्ध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे: गंगाजल =गंगा का जल

अधिकरण तत्पुरुष समास

अधिकरण तत्पुरुष में दो पदों के बीच अधिकरण कारक छिपा होता है। अधिकरण कारक का चिन्ह या विभक्ति ' में', 'पर' होता है।

जैसे:

कार्यकुशल = कार्य में कुशल

वनवास = वन में वास

1. कर्मधारय समास

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है और शब्द विशेषण – विशेष्य और उपमेय – उपमान से जुड़कर बनते हैं, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे :-

चरणकमल = कमल के समान चरण

नीलगगन = नीला है गगन जो

चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख

RAMKESHeducation.com

कर्मधारय समास के भेद:

- विशेषणपूर्वपद
- विशेष्यपूर्वपद
- विशेषणोंभयपद
- विशेष्योभयपद

1. **द्विगु समास**

द्विगु समास में उत्तर पद प्रधान होता है और पूर्व पद संख्यावाचक होता है।
जैसे:
तीन लोकों का समाहार = त्रिलोक
पाँचों वटों का समाहार = पंचवटी
तीन भुवनों का समाहार =त्रिभुवन

1. **द्वंद्व समास**

द्वंद्व समास में दोनों ही पद प्रधान रहते हैं और अधिकतर एक-दूसरे पद के विपरीत होते हैं। कोई भी पद छुपा हुआ नहीं रहता है।
जैसे:
जलवायु = जल और वायु
अपना-पराया = अपना या पराया
पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

1. **बहुव्रीहि समास**

जिस समास में कोई भी पद प्रधान ना हो या दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हों और वह तीसरा पद प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।
जैसे:
त्रिनेत्र = तीन हैं नेत्र जिसके (शिव)
लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)

संधि

RAMKESHeducation.com

दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है जिसे संधि कहते है

स्वर संधि

पास-पास स्थित दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार को स्वर संधि कहते हैं। जैसे-

सुर+अरि = सुरारि अ+अ = आ

विद्या+आलय = विद्यालय आ+आ = आ

मुनि+इन्द्र = मुनीन्द्र इ+इ = ई

श्री+ईश = श्रीश ई+ई+ = ई

गुरु+उपदेश = गुरुपदेश उ+उ = ऊ

व्यंजन संधि

पास-पास स्थित दो व्यंजनों के मेल से होने वाले विकार को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे-

जगत्+नाथ = जगन्नाथ त्+न = न्न

सत्+जन = सज्जन त्+ज = ज्ज

उत्+हार = उद्धार त्+ह =द्ध

सत्+धर्म = सद्धर्म त्+ध =द्ध

आ+छादन = आच्छादन आ+छा = च्छा

विसर्ग संधि

जहाँ किसी पद में विसर्ग के आगे किसी व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे-

मन:+बल = मनोबल विसर्ग+ब = ओब

नि:+चल = निश्चल विसर्ग+च =श्च

नि:+संदेह = निस्संदेह विसर्ग+स =स्स

धनु:+टंकार = धनुष्टंकार विसर्ग+ट =ष्ट

शब्द

वर्णो के मेल से बने हुए स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं । जैसे- हम, गाड़ी, मकान, इत्यादि ।

शब्दों का वर्गीकरण– शब्दों का वर्गीकरण मुख्यत: चार आधारों पर किया जाता है अर्थ, रचना, उत्पत्ति तथा रूपांतर।

अर्थ के अनुसार शब्द के दो भेद हैं- **(क) सार्थक और (ख) निरर्थक**

अर्थपूर्ण शब्दों को सार्थक तथा अर्थहीन शब्दों को निरर्थक कहा जाता है

रचना की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते हैं– **(1) रूढ (2) यौगिक और (3) योगरूढ़**

RAMKESHeducation.com

(1) रूढ़– जिनका कोई भी खंड सार्थक न हो और जो परम्परा से किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- लोटा, पानी, जल, इत्यादि ।

(2) यौगिक– यौगिक उन शब्दों को कहते हैं, जिनके खंड सार्थक होते हैं । जैसे- विद्यालय (विद्या और आलय), दयासागर (दया और सागर), आदि ।

(3) योगरूढ़– ऐसे शब्द, जो यौगिक तो होते हैं, पर सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं । जैसे-पंकज शब्द 'पंक' और 'ज' के मेल् से बना है, जिसका विशेष अर्थ कमल होता है ।

उत्पत्ति के अनुसार शब्द के पाँच भेद हैं-(1) तत्सम, (2) तद्भव, (3) देशज, (4) विदेशज (विदेशी) और (5) संकर ।

(1) तत्सम– तत्सम संस्कृत के वे शब्द, हैं जो अपने मूल रूप में हिन्दी में आये हैं । जैसे-अग्नि, पुष्प, पुस्तक, इत्यादि ।

(2) तद्भव– संस्कृत के वे शब्द, जिनके रूप हिन्दी में आने पर बदल गये हैं, तद्भव कहलाते हैं । जैसे-आग, कपूर, आँख, इत्यादि ।

(3) देशज– जो शब्द स्थानीय बोलियों से हिन्दी में आये हैं, उन्हें देशज कहते हैं । जैसे- पेट, डिबिया, लोटा, पगड़ी, इत्यादि ।

(4) विदेशज-जो शब्द विदेशी भाषाओं से लिये गये हैं, उन्हें विदेशज कहते हैं। जैसे- पुलिस, स्कूल, स्टेशन, इत्यादि ।

(5) संकर– दो भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बनाये गये शब्दों को 'संकर' कहा जाता है । जैसे-रेलगाड़ी, टिकटघर, आदि ।

रूपांतर के अनुसार शब्दों के दो भेद हैं- **(क) विकारी (ख) अविकारी।**

(1) **विकारी :-** वे शब्द हैं, जिनके लिंग, पुरुष और वचन के कारण रूप बदलते हैं। जैसे- गाय, लड़क, यह, वह, इत्यादि ।

(2) **अविकारी :-** वे शब्द हैं, जिनके रूप कभी नहीं बदलते हैं, इन्हें अव्यय भी कहते हैं । जैसे- आज, यहाँ, वहाँ, इत्यादि ।

अलंकार

अलंकार को दो भागों में विभाजित किया गया है:-

1 शब्दालंकार

2 अर्थालंकार

शब्दालंकार - ये शब्द पर आधारित होते हैं ! प्रमुख शब्दालंकार हैं - अनुप्रास , यमक , शलेष , पुनरुक्ति , वक्रोक्ति आदि !

RAMKESHeducation.com

अर्थालंकार - ये अर्थ पर आधारित होते हैं ! प्रमुख अर्थालंकार हैं - उपमा , रूपक , उत्प्रेक्षा, प्रतीप , व्यतिरेक , विभावना , विशेषोक्ति ,अर्थान्तरन्यास , उल्लेख , दृष्टान्त, विरोधाभास , भ्रांतिमान आदि !

उभयालंकार- उभयालंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित रहकर दोनों को चमत्कृत करते हैं!

शब्दालंकार के भाग

1- **अनुप्रास -** जहां किसी वर्ण की अनेक बार क्रम से आवृत्ति हो वहां अनुप्रास अलंकार होता है !

जैसे - भूरी -भूरी भेदभाव भूमि से भगा दिया । ' भ ' की आवृत्ति अनेक बार होने से यहां अनुप्रास अलंकार है !

2- **यमक -** जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त हो और उसके अर्थ अलग -अलग हों वहाँ यमक अलंकार होता है !

जैसे - सजना है मुझे सजना के लिए ।

यहाँ पहले सजना का अर्थ है - श्रृंगार करना और दूसरे सजना का अर्थ - नायक शब्द दो बार प्रयुक्त है ,अर्थ अलग -अलग हैं ! अतः यमक अलंकार है !

3- **शलेष -** जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो , किन्तु प्रसंग भेद में उसके अर्थ एक से अधिक हों , वहां शलेष अलंकार है !

जैसे - रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गए न ऊबरै मोती मानस चून ।।

यहाँ पानी के तीन अर्थ हैं - कान्ति , आत्म - सम्मान और जल ! अतः शलेष अलंकार है , क्योंकि पानी शब्द एक ही बार प्रयुक्त है तथा उसके अर्थ तीन हैं !

अर्थालंकार के भाग

1- **उपमा -** जहाँ गुण , धर्म या क्रिया के आधार पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है

जैसे - हरिपद कोमल कमल से ।

हरिपद (उपमेय)की तुलना कमल (उपमान) से कोमलता के कारण की गई ! अतः उपमा अलंकार है !

2- रूपक - जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है ! जैसे - अम्बर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी ।

आकाश रूपी पनघट में उषा रूपी स्त्री तारा रूपी घड़े डुबो रही है !

यहाँ आकाश पर पनघट का , उषा पर स्त्री का और तारा पर घड़े का आरोप होने से रूपक अलंकार है !

3. उत्प्रेक्षा - उपमेय में उपमान की कल्पना या सम्भावना होने पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है !

RAMKESHeducation.com

जैसे - मुख मानो चन्द्रमा है ।

यहाँ मुख (उपमेय) को चन्द्रमा (उपमान) मान लिया गया है ! यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है !

इस अलंकार की पहचान मनु , मानो , जनु , जानो शब्दों से होती है !

4- विभावना - जहां कारण के अभाव में भी कार्य हो रहा हो , वहां विभावना अलंकार है !जैसे - बिनु पग चलै सुनै बिनु काना ।

वह (भगवान) बिना पैरों के चलता है और बिना कानों के सुनता है ! कारण के अभाव में कार्य होने से यहां विभावना अलंकार है !

5- भ्रान्तिमान - उपमेय में उपमान की भ्रान्ति होने से और तदनुरूप क्रिया होने से भ्रान्तिमान अलंकार होता है ! जैसे -

नाक का मोती अधर की कान्ति से , बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है, सोचता है अन्य शुक यह कौन है ?

यहां नाक में तोते का और दन्त पंक्ति में अनार के दाने का भ्रम हुआ है , यहां भ्रान्तिमान अलंकार है !

6- **सन्देह** - जहां उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में सन्देह बना रहे तथा निशचय न हो सके, वहां सन्देह अलंकार होता है !

जैसे -

सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है ।

सारी ही की नारी है कि नारी की ही सारी है ।

7- व्यतिरेक - जहां कारण बताते हुए उपमेय की श्रेष्ठता उपमान से बताई गई हो , वहां व्यतिरेक अलंकार होता है !जैसे - का सरवरि तेहिं देउं मयंकू । चांद कलंकी वह निकलंकू ।।

मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूं ? चन्द्रमा में तो कलंक है , जबकि मुख निष्कलंक है !

8- असंगति - कारण और कार्य में संगति न होने पर असंगति अलंकार होता है !

जैसे - हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै ।

घाव तो लक्ष्मण के हृदय में हैं , पर पीड़ा राम को है , अतः असंगति अलंकार है !

9- प्रतीप - प्रतीप का अर्थ है उल्टा या विपरीत । यह उपमा अलंकार के विपरीत होता है । क्योंकि इस अलंकार में उपमान को लज्जित , पराजित या हीन दिखाकर उपमेय की श्रेष्टता बताई जाती है ! जैसे - सिय मुख समता किमि करै चन्द वापुरो रंक ।

सीताजी के मुख (उपमेय)की तुलना बेचारा चन्द्रमा (उपमान)नहीं कर सकता । उपमेय की श्रेष्टता प्रतिपादित होने से यहां प्रतीप अलंकार है !

10- **दृष्टान्त** - जहां उपमेय , उपमान और साधारण धर्म का बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव होता है,

जैसे-

बसै बुराई जासु तन ,ताही को सन्मान ।

भलो भलो कहि छोड़िए ,खोटे ग्रह जप दान ।।

यहां पूर्वार्द्ध में उपमेय वाक्य और उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है ।इनमें ' सन्मान होना ' और ' जपदान करना ' ये दो भिन्न -भिन्न धर्म कहे गए हैं । इन दोनों में बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव है । अत: दृष्टान्त अलंकार है !

11- **अर्थान्तरन्यास** - जहां सामान्य कथन का विशेष से या विशेष कथन का सामान्य से समर्थन किया जाए , वहां अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है !

जैसे -

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग ।

चन्दन विष व्यापत नहीं लपटे रहत भुजंग ।।

12- **विरोधाभास** - जहां वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास मालूम पड़े , वहां विरोधाभास अलंकार होता है ! जैसे -

या अनुरागी चित्त की गति समझें नहीं कोइ ।

ज्यों -ज्यों बूडै स्याम रंग त्यों -त्यों उज्ज्वल होइ ।।

यहां स्याम रंग में डूबने पर भी उज्ज्वल होने में विरोध आभासित होता है , परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है । अत: विरोधाभास अलंकार है !

13- **मानवीकरण** - जहां जड़ वस्तुओं या प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं का आरोप किया जाता है , वहां मानवीकरण अलंकार है ! जैसे - फूल हंसे कलियां मुसकाई ।

यहां फूलों का हंसना , कलियों का मुस्कराना मानवीय चेष्टाएं हैं , अत: मानवीकरण अलंकार है!

14- **अतिशयोक्ति** - अतिशयोक्ति का अर्थ है - किसी बात को बढ़ा -चढ़ाकर कहना । जब काव्य में कोई बात बहुत बढ़ा -चढ़ाकर कही जाती है तो वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है !जैसे - लहरें व्योम चूमती उठतीं ।

RAMKESHeducation.com

यहां लहरों को आकाश चूमता हुआ दिखाकर अतिशयोक्ति का विधान किया गया है !

15- वक्रोक्ति - जहां किसी वाक्य में वक्ता के आशय से भिन्न अर्थ की कल्पना की जाती है , वहां वक्रोक्ति अलंकार होता है !

- इसके दो भेद होते हैं - (1) काकु वक्रोक्ति (2) शलेष वक्रोक्ति ।

16- काकु वक्रोक्ति - वहां होता है जहां वक्ता के कथन का कण्ठ ध्वनि के कारण श्रोता भिन्न अर्थ लगाता है । जैसे - मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू ।

17- शलेष वक्रोक्ति - जहां शलेष के द्वारा वक्ता के कथन का भिन्न अर्थ लिया जाता है ! जैसे -

को तुम हौ इत आये कहां घनस्याम हौ तौ कितहूं बरसो ।

चितचोर कहावत हैं हम तौ तहां जाहुं जहां धन है सरसों ।।

18- **अन्योक्ति** - अन्योक्ति का अर्थ है अन्य के प्रति कही गई उक्ति । इस अलंकार में अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत का वर्णन किया जाता है !
जैसे -

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहि काल ।

अली कली ही सौं बिध्यौं आगे कौन हवाल ।।

RAMKESHeducation.com

Thanks For Reading